सैय्यद वंश (1414-1450)

☞ इस वंश के बारे में जानकारी के लिए एक मात्र स्रोत तारिख-ए-मुबारकशाही है। प्रमुख शासकों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है-

☞ खिज्र खाँ **(1414-1421)** – यह सैय्यद वंश का संस्थापक था।

- इसने रैयत-ए-आला की उपाधी धारण किया था।
- इस शासक ने दौलत खाँ लोदी को पराजित किया था और तैमूरलंग के पुत्र शहरुप के प्रति वफादारी निभाते हुए नियमित रुप से उसको कर भेजता था।

- मुबारक शाह **(1421-1434)**– यह प्रथम शासक था, जिसने शाह की उपाधि धारण किया और अपने नाम का सिक्का जारी किया। इसने खोक्खर को पराजित कर दिया, जिसका नेता जसरथ था।
- इसके राज्य दरबार में याहिया-बिन-अहमद सरहिन्दी रहते थे, जिन्होंने तारिख-ए-मुबारकशाही की रचना किया था।

☞ इसने मुबारकाबाद नामक नये नगर का निर्माण कराकर उसका निरीक्षण कर रहा था। तब इसके वजीर सरवर-उल-मुल्क ने इसकी हत्या करा दिया।

☞ मुहम्मद शाह **(1434-1445)**– यह सरवर-उल-मुल्क के सहयोग से गद्दी पर आया, लेकिन इसने कमाल-उल-मुल्क को वजीर बना दिया और सरवर-उल-मुल्क की हत्या करा दिया।

☞ इसके समय में मालवा के शासक महमूद खिलजी ने दिल्ली की तरफ अभियान किया तब सुल्तान ने बहलोल-लोदी की सहायता के लिए बुलाया। परिणामस्वरुप मालवा का शासक वापस लौट गया। खुश होकर सुल्तान ने बहलोल लोदी को खान-ए-खाना (यह वफादार) की उपाधि प्रदान किया और उसे अपना पुत्र (फर्जन्द) कहकर संबोधित किया।

☞ अलाउद्दीन आलमशाह **(1445-1450)**– यह सय्यैद वंश का अंतिम शासक था। वजीर हामिद खाँ से अनबन होने के कारण सुल्तान दिल्ली से बदायूँ गया और वहीं पर **1476** में इसकी मृत्यु हुई।

☞ दिल्ली की गद्दी खाली होने पर हामीद खाँ ने बहलोल लोदी को आंमत्रित किया। दिल्ली पहुँचकर बहलोल लोदी ने हामीद खाँ की हत्या किया। सैय्यद वंश का अंत हुआ और लोदी वंश स्थापित हुआ।

लोदी वंश (1451-1526)

☞ दिल्ली की गद्दी पर पहली बार तुर्कों को चुनौती देते हुए अफगानियों ने अपनी सत्ता को स्थापित किया। यह लोग अफगानिस्तान के गिलजाई कबीला के सबसे महत्वपूर्ण शाखा शाहुखेल से संबंधित थे। इसके प्रमुख शासकों का वर्णन निम्नलिखित हैं-

☞ यह लोदी वंश का संस्थापक था। यह वंश दिल्ली सल्तनत का अंतिम वंश था। इसके दरबारी कवि दाऊदी ने इसको उदार प्रवृत्ति का सुल्तान कहा है। दाऊदी के अनुसार यह अपने सरदारों को "मकसद-ए-अली" कहकर संबोधित करता था और उनके खड़े रहने पर स्वयं भी खड़ा रहता था और उनके बैठने के पश्चात् राज्य सिंहासन के बगल में नीचे बैठकर राजकीय कार्य को संपन्न करता था।

- यह दिल्ली की गद्दी पर अफगानी सत्ता को स्थापित करने वाला प्रथम सुल्तान था।
- इसने जौनपुर को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया, जो इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि था। जौनपुर को पूर्व का सिराज कहा गया है जहाँ पर शर्की वंश के शासकों ने अटाला देवी के मस्जिद का निर्माण कराया था। इसने ग्वालियर के शासक मानसिंह को पराजित करके **80** लाख टंका वसूल किया था।

☞ सिकंदर लोदी **(1489-1517)** – यह लोदी वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने गद्दी पर आने के साथ भूमि का पैमाइश के लिए गज-ए-सिकन्दरी नामक पैमाना को जारी किया, जो **30** इंच का होता था। यह पैमाना मुगलकाल में भी चला।

☞ यह सुल्तान 'गुलरुखी' नामक से फारसी भाषा में कविताओं की रचना करता था। इसके समय में लज्जत-ए-सिकन्दरी, तिब्बी-ए-सिकन्दरी नाम से फारसी भाषा में ग्रंथ लिखा गया। मियाँ भुआ नामक विद्वान ने फरंहगे-सिकन्दरी ग्रंथ की रचना किया था। यह फिरोजशाह तुगलक के समान कट्टर सुल्तान था। इसने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर के मूर्ति को तोड़कर मांस तौलने के लिए कसाइयों को दे दिया।

☞ इसने स्थापत्य कला के क्षेत्र में अपने पिता बहलोल लोदी का मकबरा बनवाया और इसके पुत्र इब्राहिम लोदी ने इसका मकबरा बनवाया। इसलिए प्रसिद्ध विद्वान पर्सीब्राउन ने लोदी वंश के काल को मकबरों का काल कहा है।

☞ इब्राहिम लोदी **(1517-1526)**– यह दिल्ली सल्तनत का और लोदी वंश का अंतिम शासक था। यह लोदी, फारमूली, नुहानी/लोहानी लोगों के समर्थन से गद्दी पर आया था, लेकिन अब इन्हीं लोगों को दबाने का कार्य शुरु किया जो पतन का कारण बना। मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने **1517-1518** में दिल्ली के समीप घटोली के युद्ध में इसको पराजित कर दिया था।

☞ आलम खाँ लोदी और दिलावर खाँ लोदी ने भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को आमंत्रित किया। कुछ विद्वान के अनुसार राणा सांगा ने भी आमंत्रित किया था। परिणामस्वरुप **1526** में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ। इस प्रकार लोदी वंश के साथ-साथ दिल्ली स्ल्तनत का अंत हुआ और मुगल वंश स्थापित हुआ।